मनुष्य जन्म अनमोल रे .....

मनुष्य जन्म अनमोल रे, मिट्टी में ना रोल रे
अब तो मिला है फिर न मिलेगा कभी नहीं,
कभी नहीं, कभी नहीं रे ।। टेर ।।
तू सत्संग में जाया कर, गीत प्रभु के गाया कर।
प्रभु–दर्शन का लाभ उठाकर, जीवन सफल बनाया कर।
नहीं लगता है कुछ मोल रे ।। मिट्टी में ना रोल रे ...
अरे ! तू बुलबुला है पानी का, मत कर जोर जवानी का।
नेक कमाई कर ले रे बंदे, पता नहीं ज़िन्दगानी का।
सबसे मीठा बोल रे ।। मिट्टी में ना रोल रे ....
सब तो मतलब का संसार है, नहीं उसका एतबार है।
संभल–संभल कर कदम रखो, यह फूल नहीं अंगार है।
मन की आँखें खोल रे ।। मिट्टी में ना रोल रे ...
श्रीसतगुरू सिरमौर है, ज्ञान का भंडार है।
जो कोई इनकी शरण में आवे, कर दे बेड़ा पार है।
ज्ञान है अनमोल रे ।। मिट्टी में ना रोल रे ...

एक शब्द सुख खानि है, एक शब्द दुःख खानि।
एक शब्द बंधन कटै, एक शब्द गल फांसि।।